بسم الله الرحمن الرحيم

لا اله الا الله محمد رسول الله

बिसमिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहील करीम

अफज़लूल ज़िक्र

ला इलाहा इल्लल्लाहू मोहम्मदुर्रसूलुल्लाहे

स्वल्लल्लाहो अलैहे व अलेही व अस्हाबेही व बारिक व सल्लिम

कामिल ईमान

मुअल्लिफ़

खाकपा–ए–पीर हज़रत ख़्वाजा सूफ़ी शेख़
मोहम्मद यूनुस अली शाह क़ादरी अलचिश्ती इफ़तेख़ारी,
चरागे़ पीर आदिल मख्मली पीर

मुरत्तिब

ख़ाकपा–ए–औलिया सज्जादा नशीन दूव्वम ख़्वाजा शेख़
मोहम्मद इरफान अली शाह
क़ादरी अलचिश्ती इफ़तेख़ारी, नूरानी पीर

जुमला हुकूक़ महेफ़ूज़ हैं

किताब का नाम : **कामिल ईमान**

मुअल्लिफ़ : हज़रत ख्वाजा सूफ़ी शेख़ मोहम्मद यूनुस अली शाह क़ादरी अलचिश्ती इफ़तेख़ारी चराग़े पीर आदिल मखमली पीर अफ़ी अनहू

मुरत्तिब : हज़रत ख्वाजा शेख मोहम्मद इरफान अली शाह क़ादरी अलचिश्ती इफ़तेख़ारी नूरानी पीर

नज़रे सानी : हज़रत अल्लामा मुफ्ती मौलाना मोहम्मद वज़ीर आलम क़ादरी नूरी

इशाअते अव्वल : बमौक़ा जश्ने उर्स मुबारक हज़रत मासूम पीर (र.अ.) २४ दिसम्बर २००८

ताबेअ व नाशिर : मख़मली पीर इंतेज़ामिया कमीटी

कम्प्युटर कम्पोज़िंग: एस.एस. ग्राफिक्स, उन्दरीया स्ट्रीट, मुंबई–४०० ००८.

कुल सफ़हात :

तादाद : १००० (एक हज़ार)

हदिया : रू. /–

<u>किताब मिलने के पते:</u>

१) खान्काहे मखमली पीर, क़ादरी विला, रू. नं.४, पी.एल. लोखंडे मार्ग, चेम्बूर (वेस्ट), मुंबई–४०००८९.

२) आसतान–ए–मख़मली पीर, हाल बुदरूग, बॉम्बे पूणे रोड, ता. खालापुर, जि. रायगड, खपोली शरीफ़–४१०२०३ (महाराष्ट्र)

३) आसतान–ए–मासूम पीर, वरोडे शरीफ, ता. कनकवली, जि. सिंधूदुर्ग (महाराष्ट्र)

फहरिस्त

इन्तेसाब

बिसमिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहील करीम

कामिल ईमान

आला हज़रत अज़ीमुल बरकत, फ़ैज़े दर्जत, कुतुबुल अक़्ताब, शेखुल आशिक़ीन,मोहिब्बुस–सादिक़ीन, शेखुल वासलीन आरिफ बिल्लाह हज़रत ख्वाजा **शेख़ मोहम्मद हुसैन शाह**

क़ादरी अलचिश्ती

इफ़तेख़ारी अल–हसनी वल–हुसैनी,

पीर आदिल बिजापुरी (रह.)

के नाम से मन्सुब कर रहा हूँ

जिनके इश्क़े हक़ीक़ी, उलूमे बातिनी, फ़ैज़े रूहानी और माअरिफ़ते इलाही से सरशार हो कर ये किताब आलमे वजूद में आई है।

" गर कुबूल उफतद ज़हे इज़्ज़ो शर्फ़ "

खाकपा–ए–पीर आदिल

फ़क़ीर हक़ीर मन ख्वाजा सूफी **शेख मोहम्मद यूनुस अली शाह**

क़ादरी अलचिश्ती इफ़तेख़ारी **चरागे पीर आदिल मखमली पीर**

नज़रे सानी

बिसमिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहील करीम

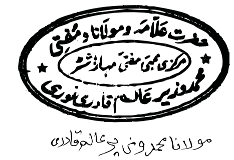
"कामिल ईमान" किताब का बगौर मुतालेआ करने पर ये महसुस हुआ कि ये किताब क़लमा–ए–तय्यबा के हक़ाइक़ पर मअरकतुल आरा तसनीफ व तालीफ है। जो भी शख्स इसका बग़ौर मुतालेआ करेगा उसका दिल नूर–ए–ईमानी से जगमगा उठेगा। और उसके दिल में हक़ व सदाक़त के लाखों चराग़ रौशन होंगे। फी ज़माना ऐसी अकसीर किताब की ज़रूरत भी थी। जो लोगों के ईमान की सही तरजुमानी कर सके।

पीरे तरीक़त हज़रत मखमली पीर साहब क़िबला ने इस जामे किताब को लिख कर तालिबाने हक़, जुमला मुरीदीन व आशिक़ीन की बहुत ही दिलकश अनदाज़ में रहनुमाई फ़रमाई है। इस किताब के ज़रिए हम और आप अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह में कुर्ब हासिल कर सकते हैं और हुजूरे पाक अलैहिस्सलातो वस्सलाम की बारगाहे गौहर में भी रसाई नसीब हो सकती है।

इस किताब से तौहीद व रिसालत की सही निशानदेही हो सकती है। और मुज़दा–ए–बख्शिश मिल सकता है।

बशर्त ये कि कामिल पीर के दस्ते हक़ पर बैअ़त हो कर अ़मल पैरा हों।

फकत दुआगो



अल्लामा मुफ़ती **मोहम्मद वज़ीर आलम** क़ादरी नूरी

(२२ रज्जबुल मुरज्जब १४२९ हिजरी)

अर्ज़े हाल

बिसमिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहील करीम

अलहम्दुलिल्लाह! कामिल ईमान किताब का मुतालेआ करने के बाद एक नई रौशनी मिली और ईमान व यक़ीन की खुशबू से दिल के दरीचे खुल गए। ज़हेन व फ़िक्र व अक़्ल के तमाम गोशे नूर–ए–ईमान से मुनव्वर हो गए। हुज़ूर सूफ़ी–ए–बासफ़ा, वली–ए–कामिल, कुतुबुल अक़ताब, आरिफ बिल्लाह, पीरे तरीक़त हज़रत मखमली पीर साहब किबला दामत बरकातुहुम् आलिया शरीअत व मआरिफत के अज़ीम संगम हैं जिन्हे पहचान्ना बहुत मुश्किल है।

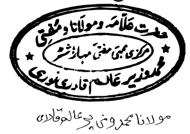
मुसल्सल एक घंटे की गुफ़्त व शनीद जिसका माहसिल अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की पहचान बता देना, हुज़ूर नबी–ए–करीम (स्व.) की बे पनाह मोहब्बत और नज़रे करम से कुर्आन व ईमान समझा देना, अल्लाह तबारक व तआला को जानना, पहचान्ना, पाना यही खुदावंदे कुद्दूस की असली पहचान है। हुज़ूर मखमली पीर साहब किबला बयक वक़्त बहुत बडी जामिय्यत के पैकर और रौशन चराग़ हैं।

मुझे ये भी कह लेने दीजिए कि उलमा–ए–कराम, दानिश्वराने कौम व मिल्लत व ग्रोहे सूफ़िया और अवाम व ख्वास को एक सांचे में ढाल कर चलना ये भी बहुत बड़ी बात है। इस हैसियत से भी हुज़ूर पीर मखमली साहब किबला खुलूस व मोहब्बत व ईमान के बहुत बडे पुर कशिश व मुतहम्मिल शखसियत के मालिक हैं और इस दौर में सब से बडे नाकाबिले तसख़ीर खलाइक़ में एक हैं और दुनिया की एक नायाब और अज़ीम हस्ती हैं और अपने वक़्त के ऊलुल अज़्म वारिसुल अंबिया की खूबियों से मुज़ैय्यन और यकता–ए–रोज़गार हैं।

हज़ारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है
बडी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा

बंदा दुआगो है कि हुज़ूर मखमली पीर साहब किबला का साया हम सब मुरीदीन व मोअतकेदीन पर तादेर क़ायम व दायम रहे। आमीन सुम्मा आमीन! बजाहे सय्यदुल मुर्सलीन(स्व.)

फक़त दुआगो



अल्लामा मुफ़ती **मोहम्मद वजीर आलम** क़ादरी नूरी

(२२ रज्जबुल मुरज्जब १४२९ हिजरी)

तक़रीज़

बिसमिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहील करीम

इमामे तरीक़त, राज़दारे हक़ीक़त, दुर्रे गंजे खफी, कुतुबे आलम, शेखुल मशाइख, शेखुल आरिफ़ीन, हज़रत ख़्वाजा सूफी शेंख मोहम्मद यूनुस अली शाह कादरी अलचिश्ती इफतेखा़री मख़मली पीर, चराग़े पीर आदिल मुदाज़ल्लहुल आली की ज़ाते बा बरकात कोई मोहताजे तआरूफ नहीं। अलहम्दुलिल्लाह! फ़िल वक़्त आप का शुमार हिंदुस्तान के अज़ीम मशाइखीने कराम और आरिफ़ीन में होता है। आप के खुल्फ़ा व मुरीदीन अरब व अजम के गोशे गोशे में फैले हुए हैं। और क़लमा तय्यबा की तबलीग़ कर रहे हैं। और हज़ारों लोग आपके दस्ते हक़ पर बैअत होकर फ़ैज़याब हो रहे हैं। पीरे तरीक़त हज़रत मख़मली पीर साहब क़िबला ने निहायत मेहनत और अर्क़रेज़ी से सलासत से माअमूर मुदल्लल और मुस्तनद हवालों से मुज़ैय्यन, ज़ेरे नज़र किताब ''कामिल ईमान'' मुरत्तब फरमाई है। हज़रत किबला की तक़रीज़ और तहसीन लायक़े तारीफ है। इस किताब में क़लमा–ए–तय्यब की अज़मत व फ़ज़ीलत पर मुहक्क़िाना अन्दाज़ में रौशनी डाली गई है।

अलहम्दुलिल्लाह! जो भी इस किताब को नज़रे अमीक़ से पढ़ेगा उसका दिल नूरे ईमानी, अल्लाह और उसके रसूल (स्व.) की मोहब्बत से लबरेज़ हो जाएगा। और बुज़ुर्गाने दीन के फ़ुयूज़ व बरकात से माला माल हो जाएगा। ये किताब कामिल ईमान के मुतलाशियों के लिए, वहदत के समुंदर में ग़ौता लगाने वालों के लिए, आखिरत की फिक्र करने वालों के लिए, कुर्बे इलाही की जुस्तजू करने वालों के लिए, तालिबे हक़ के लिए और जुमला मुरीदीन व आशिक़ीन के लिए निहायत ही मुफ़ीद और अनमोल तोहफ़ा है।

अल्लाह जल्ले शानहू से क़वी उम्मीद है कि ये किताब तारीकी में रौशन चराग़ साबित होगी। और अलहम्दुलिल्लाह! आलमे इस्लाम में बेहद मक़बूलियत हासिल करेगी। बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में ये अरीज़ा है कि मौला तबारक व तआला अपने हबीबे करीम (स्व.) के सदक़ा व तुफ़ैल में हज़रत किबला की इस तसनीफ को शर्फ़े कुबूलियत अता फरमाए। आप की उम्र व सेहत में बरकत अता फरमाए और इस किताब के नेक मकासिद पर हम सब को अमल पैरा होने की नेक तौफ़ीक़े रफ़ीक़ अता फरमाए। आमीन सुम्मा आमीन! बजाहे सय्यदुल मुर्सलीन (स्व.) व अला खैरे खल्किही मोहम्मदिंव व आलेहि अजमईन बिरहमतीका या अरहमर्राहिमीन!

फक़त दुआओं का तालिब

अल्लामा मौलाना क़ारी **मोहम्मद शफी शाह** क़ादरी

खतीब व इमाम नूरे मोहम्मदी सुन्नी मदीना मसजिद, भाँडुप, मुंबई–७८

(२२ रज्जबुल मुरज्जब १४२९ हिजरी)

بسم الله الرحمن الرحيم

لا اله الا الله محمد رسول الله

बिसमिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहील करीम

अफज़लूल ज़िक्र

ला इलाहा इल्लल्लाहू मोहम्मदुर्रसूलुल्लाहे

हुवल पीर आदिल

पेशे लफ्ज़

हज़रत खिज़र अलैहिस्सलाम से बाज़ सालेहिन ने पूछा कि जो अल्लाह तआला के दोस्त हैं जो हर ज़माने में पाए जाते हैं, क्या आप जानते हैं? हज़रत खिज़र अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि जब हुजूर(स्व) का विसाल हुआ तो ज़मीन रोने लगी और चिल्लाने लगी और अपने परवरदिगार के सामने शिकवा व शिकायत करने लगी कि ऐ परवरदिगार, अब तक मेरी पीठ पर अंबिया चलते रहे जिन का सिलसिला हजरत आदम अलैहिस्सलाम से जारी हुआ, और जिन्न व इन्स के सरदार हज़रत मोहम्मद (स्व.) पर खत्म होगया। अब मेरी पीठ पर आईदा कोई नबी नहीं चलेगा और इस तरह हमेशा के लिए मेरा फ़खर् खत्म हो जाएगा। जब अल्लाह ने इस की शिकायत सुनी तो फ़रमाया ऐ ज़मीन! तुझको रोने, चिल्लाने और खौ़फ करने की ज़रूरत नहीं है। मैं अंबिया की जगह अपने औलिया को रवाना करूंगा। जिन के दिल अंबिया के दिलों की तरह होंगे। जब ज़मीन ने ये सुना तो बहुत खुश हुई इसका सारा ग़म व अलम जाता रहा और उसने इसपर खुदा का शुक्र अदा किया।

औलियाए कराम जो अल्लाह तआला के दोस्त और उसकी सिफात के आरिफ होते हैं वह इनसानों के हमदर्द होते हैं और दुनिया में

अमन पैदा करके अल्लाह के बंदों को अल्लाह से मिलाने की कोशिश करते रहते हैं।

ऐसे ही एक वली–ए–कामिल आरिफ बिल्लाह आला हज़रत अझीमुल बरकत,फैज़े दरजत, कुतुबुल अक्ताब मोहिब्बुस्सादिक़ीन शेखुल आशिकीन ख्वाजा शेख मोहम्मद हुसैन शाह क़ादरी अलचिश्ती इफ़तेखारी अल–हसनी वल– हुसैनी सरकार पीर आदिल रहेमतुल्लाह अलैह हैं। हज़रत किबला व काबा मेरे पीर व मुर्शिद हैं। हज़रत किबला व काबा सरकार पीर आदिल बिजापुरी के नाम से मशहूर हैं। आप का मज़ारे अक़दस बिजापुर के मशहूर गोल गुंबद के करीब शुमाल में वाक़े है और आपका आस्ताना''हरे गुंबद'' के नाम से मशहूर है। आस्ताना–ए–मुबारक से फ़ैज़ाने करम व अता जारी व सारी है। हर साल २३ और २४ रबीउल अव्वल को सरकार पीर आदिल बिजापुरी का उर्स मुबारक बडी ही धूम धाम से मनाया जाता है। हज़ारों की तादाद में खुलफाए कराम और मुरीदीन व आशिकीन सरकार पीर आदिल के मज़ारे अक़दस की क़दम बोसी व ज़ियारत को आते हैं। उर्स मुबारक में शिर्कत फरमाकर फैज़याब होते हैं।

सरकार पीर आदिल (रह.) ने अपने दौरे हयात में लाखों मुरीदीन की तालीम व तरबियत और इल्मे मआरिफत की आगाही से रूशनाश कराते हुए कई खुलफाए कराम को क़लमा–ए–तय्यबा की **इक़राऊन बिललिसान व तसदीकुन् बील क़ल्ब** की हकीकी ज़ाहीरी व बातिनी तालीम की दाअवते हक़ व इशाअत पर मामूर फ़रमाया जिन का सिलसिला हिंदुस्तान के अलावाह दीगर मुमालिक में भी अलहम्दुलिल्लाह जारी व सारी है। १९७० से सरकार पीर आदिल र.अ.का सिलसिला चेम्बूर मुंबई में शुरू हुआ और अतराफ़ के इलाक़े में फ़ैल रहा था। उस वक़्त खाकसार हुज़ूर मुफतीए आज़मे हिंद हज़रत अल्लामा शाह मोहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा नूरी (रह.) के मुरीदों में शामिल था और चेम्बूर नूरानी मस्जिद में जनरल सेक्रेट्री की हैसियत से खिदमात अंजाम दे रहा था। उसी दौरान मस्जिद के

अतराफ में सरकार पीर आदिल (रह.) का सिलसिला जारी था। अकसर उनके मुरीदों से हमारी बहेस हुआ करती थी। तो उनके मुरीदीन कहते थे कि हमारे पीर तो कामिल पीर हैं। लेकिन आप लोग नहीं जानते कि वह कैसी अज़ीम हसती हैं। एक बार महेफिल में आकर तो देखो कि वह कौन सी नेअमते उज़्मा लेकर आए हैं। हम ने सोचा कि चलो चल कर देखेंगे। एक दफ़ा रात में मैं और मेरे साथी आप के महफिल खाने में पहुंच गए। आप क़लमा तय्यबा की तसदीकुन बिल क़ल्ब के मौज़ू पर बयान कर रहे थे। बयान के दौरान आप पर एक अजीब कैफ़ियत तारी हुई। अचानक नूर सी तजल्ली नमूदार हुई जिस से आपका चहेरा मुबारक नूरुन अला नूर की सूरत में तबदील हो गया। ये चश्मदीद करामत देखने के बाद आपकी क़द्र व मंज़िलत को जान कर हम उनपर शैदा हो गए। और दूसरे ही दिनसे आप के तालिबों में हमारा शुमार हुआ। क़लमा–ए–तय्यबा के असरार व नेअमतों से माला माल हुए। और आप के इश्क़ व मोहब्बत में सरशार होकर अहलो व अयाल और रिशतेदार दोस्त व अहबाब को धीरे धीरे आप के सिलसिले में दाखिल कराया। आप ने मुझ जैसे ख़ाकसार को अपने दामने आग़ोश में पनाह अता करके अपने उलूमे बातनी व फ़ुयूज़े रब्बानी व असरारे मख़फी, गंजे खफी, रमूज़े फ़ुक़राई और मआरिफते इलाही की लाज़वाल दौलत से माला माल किया।

ख़ाकसार की ख़िलाफते क़ादरिया आलिया ख़ुलफाईया दादा पीर सुलतानुल आरिफीन रौशन ज़मीर हज़रत ख़्वाजा सय्यद मोहम्मद बादशाह कादरी अलचिशती इफतेख़ारी यमनी क़दीर (रह.) की सरपरस्ती में बतारीख २१ ज़िलहज्जा १३९६ हिजरी मुताबिक १३ दिसम्बर १९७६ बरोज़ पीर, बाद नमाज़ असर बमुकाम मुंबई के विक्रोली टैगोर नगर मैदान में अहले तरीक़ चार पीर चौदा ख़ानवाद–ए–आलिया के फ़कीर व फ़ुकरा सरग्रोहान मंडल दारान, ख़ुलफाए कराम, सज्जादगाने मशाइखीने उज़्ज़ाम और उलमाए कराम के रू बरू रसमे खिलाफत अदा हुई। खिलाफत के बाद हम चार खलीफा भाई खिलाफत नामा लेकर दादा पीर हज़रत

कदीरूल्लाह (रह.) की खिदमत में दुआ लेने और दस्तखत लेने के लिए हाज़िर हुए। इस वक्त दो खुल्फा के नाम मोहम्मद यूनुस शाह कादरी थे। हजरत कदीरूल्लाह (रह.) ने खिलाफत नामा पर अपने कलम से खाकसार के नाम के साथ अली नाम जोडने का हुक्म दिया। इस तरह खाकसार पर भी दादा पीर हज़रत कदीरूल्लाह शाह की नज़रे करम हुई और ख़ाकसार का इस्मे गिरामी 'मोहम्मद यूनुस अली शाह क़ादरी' हो गया।

ख़ाकसार की ख़िलाफते चिशतिया बहिशतिया की रस्म बतारीख १४ मुहर्रमुल हराम १४२० हिजरी मुताबिक १३ नवेम्बर १९८१ में बमुकाम आस्ताना–ए–पीर आदिल बिजापुर शरीफ़ में अदा हुई।

यक ज़माना सोहबते बा औलिया
बहतर अज़ सद साला ताअते बे रिया (मौलाना रोम)

''अल्लाह वालों की चंद लम्हे की सोहबत सौ साल की बे रिया इबादत से बहतर है।''

सरकार पीर आदिल की चशमे करम और लुत्फो इनायत ख़ाकसार पर हमेशा रही और ता क़यामत जारी व सारी रहेगी। सरकार पीर आदिल का रूहानी फैज़ और नवाज़िशे करम तमाम आशिकीन, मुरीदीन और खुलफाए कराम पर हरदम अता हो रहा है। और क़यामत तक जारी व सारी रहेगा। जाँनिसार ख़ुल्फाए कराम को बहेतरीन अलकाब से नवाज़ा गया। ख़ाकसार की सालहा साल की अदना ख़िदमात को भी सरकार पीर आदिल ने अपनी अलताफो करम की नज़रों से नवाज़ा। एक मरतबा दादा पीर हजरत कदीरूल्लाह (रह.) ने ख़ाकसार की तरफ देख कर हज़रत किबला सरकार पीर आदिल बिजापुरी से फ़रमाया कि इत्नी कम उम्र में खिलाफत दी है। आखिर क्या वजह है? तब हजरत सरकार पीर आदिल ने फ़रमाया ''ये मेरा बेटा बहुत खिदमतगुज़ार है। ये एक ऐसा चराग है जिसे देख कर बुझे हुए चराग भी रौशन हो जाते हैं।'' ख़ाकसार के लिए इन नवाज़िश भरे कलमात को कहे कर हजरत सरकार पीर आदिल ने बादहू जमीअ खुलफाए कराम, मशाइखीने उज़्ज़ाम की मौजूदगी में ''चरागे पीर

आदिल'' और ''मख़मली पीर'' के अलकाब से नवाज़ा।

इसी तरह सरकार पीर आदिल ने अपनी आरिफाना नज़रे करम से गुलशनबी क़ादरिया जो ख़ाकसार की रफीक़े हयात हैं, उन्हें भी कश्फो करामात का धनी बना दिया। बैअत होने के बाद गुलशनबी कादरिया पर सरकार पीर आदिल की तालीमात और अनवारे तजल्लियात का ऐसा असर हुआ कि वह दिन रात ज़िक्र व अज़कार में मशगूल रहतीं। ख़ाकसार पर हज़रत किबला की बंदा नवाज़ी है कि जब भी वह मुंबई तशरीफ लाते तो खाकसार के घर पर ही कयाम करना पसंद फरमाते। रात दिन मुरीदीन व आशिक़ीन की तालीमात का सिलसिला जारी रहता। इस दौरान गुलशनबी क़ादरिया हमा वक्त तन मन धन से हज़रत किबला की ख़िदमात अन्जाम देती रहतीं।

दीवान्गी का ये आलम होता कि ह़जरत क़िबला के फ़रमाने से पहले उनकी ज़रूरत की हर चीज़ फ़राहम कर देतीं। काम करते करते सारा बयान और तालीमाते सरकार पीर आदिल के रूहानी फ़ैज़ से ज़हेन नशीन कर लेतीं और जब हजरत किबला की मसनद नशीन के करीब बैठ जातीं तो बहेरे वहेदत और इल्मे इर्फान के ऐसे नुकते ज़बाने मुबारक से निकलते कि सिलसिले के ज़मीअ खुलफाए कराम, मुरीदीन और खाकसार भी हैरत ज़दा रह जाता कि एक ऐसी खातून जिसे पढ़ना लिखना भी नहीं आता, पीर की नज़रे इनायत से ऐसा इल्म इर्फान पेश कर सकती हैं जो एक दानिशमंद भी नहीं कर सकता तो आप बखुबी अनदाज़ा कर सक्ते हैं कि हजरत किबला के ख़िदमत गुज़ारों का ये आलम है तो सरकार पीर आदिल का आलम क्या होगा।

अल्लाह अल्लाह क्या राज़ है
रूहानियत की परवाज़ है

गुलशनबी कादरिया जब भी हजरत किबला के रूबरू आतीं वह खुलूसो मोहब्बत से कह उठते ''देखो मेरी दीवानी आगई'' सिलसिले के ज़मीअ खुलफाए कराम और मुरीदीन भी उन्हें अकीदत व एहतेराम से

''अम्माँ जान'' कहे कर पुकारते हैं। आज भी उनका आलम ये है कि वह हर वक्त यादे इलाही में मुस्तग़रक़ होकर हजारों मुरीदीन व आशिक़ीन और खुलफाए कराम को दर्स दिया करती हैं और तालिबाने हक्क़ उनसे बहरे वहदत के मोती पाकर दीन व दुनिया को संवार रहे हैं। कशफो करामात का सिलसिला आज भी रवाँ दवाँ है। बस जो ज़बाने मुबारक से निकलता, वह हो जाता। दुआओं का फ़ैज़ो करम जारी है और ता क़यामत जारी व सारी रहेगा। आमीन सुम्मा आमीन!

तमन्ना दर्दे दिल की हो तो कर खिदमत फ़कीरों की
नहीं मिलता है ये गौहर बादशाहों के खज़ीनों में
(अल्लामा इक़बाल)

ख़ाकसार के बच्चों पर भी मेरे कामिल पीर हजरत सरकार पीर आदिल (रह.) की नज़रे करम हुई। ''सरकार पीर आदिल ने अपनी ज़िंदगी में कहा था कि यूनुस अली शाह तेरा हर बच्चा वली है।'' ये सरकार पीर आदिल का करम व नवाज़िश है कि ख़ाकसार के साहबज़ादों को खिलाफते क़ादरीया आलिया खुलफ़ाईया और ख़िलाफते चिशतिया अहले बहेशतिया से नवाज़ा गया।

सज्जादगाने हज़रत मखमली पीरः—

अव्वल : हज़रत ख़्वाजा शेख़ मोहम्मद फ़य्याजुद्दीन शाह क़ादरी अलचिशती इफतेख़ारी, सुबहानी पीर

दूव्वम : हज़रत ख़्वाजा शेख मोहम्मद इरफान अली शाह क़ादरी अलचिशती इफतेख़ारी, नूरानी पीर

सूव्वम : हज़रत ख़्वाजा शेख मोहम्मद करीमुल्लाह शाह क़ादरी अलचिशती इफतेख़ारी

चहारूम : हज़रत ख़्वाजा शेख मोहम्मद महेताबपाशा शाह कादरी अलचिशती इफतेख़ारी

पंजुम : हज़रत ख़्वाजा शेख मोहम्मद आदिल नवाज़ शाह कादरी अलचिशती इफतेख़ारी

आज भी सरकार पीर आदिल का रूहानी फ़ैज़ो करम तमाम सिलसिले पर जारी व सारी है और ता क़यामत जारी रहेगा। आमीन सुम्मा आमीन!

ख़ाकसार के वालिदे मोहतरम शेख़ अब्दुल क़ादर शाह क़ादरी अलमाअरूफ मासूम पीर (रह.) हजरत किबला पीर आदिल बिजापुरी(रह.) के दस्ते हक्क़ पर बतारीख २१ जमादिल आखिर १३९५ मुताबिक जुलाई १९७५ को मुबई के चेम्बूर मर्कज़ में बैअत हुए। बैअत करने के बाद मासूम पीर (रह.) मुंबई की सर ज़मीन पर कलमे का पैगाम अवामुन्नास को पहुंचाते रहे और ख़िदमते ख़ल्क़ करते रहे। इसी तरह दीन का पैग़ाम बिरादराने इस्लाम और अपने ख़ानदान वालों को देते हुए काफ़ी लोगों को अपने पीर व मुर्शिद के दस्ते हक्क़ पर बैअत करवाई।

हज़रत मासूम पीर (रह.) अपने दादा पीर हज़रत कदीरूल्लाह(रह.) से बे पनाह मोहब्बत और दिल व जान से ख़िदमत किया करते थे। इसी ख़िदमत का सिला ये है कि हज़रत दादा पीर ख़्वाजा सय्यद मोहम्मद बादशाह क़ादरी अलचिशती यमनी कदीर (रह.) ने हजरत किबला सरकार पीर आदिल को बशारत दी, जिस में शेख़ अब्दुल कादिर साहब को ख़िलाफत से सरफ़राज़ करने का इशारा दिया।

हजरत किबला पीर आदिल ने अपने पीर व मुर्शिद हजरत किबला कदीरूल्लाह के हुक्म के मुताबिक बिजापुर की सर जमीन पर खानकाहे पीर आदिल में मशाइखीने उज़्ज़ाम, खुलफाए कराम, फुकराए तरीक मंडल दारान व सरग्रोहान की मौजूदगी में बरोज़ पीर बतारीख २५ रबीउल अव्वल १४०९ हिज़्री बमुताबिक ६ नवम्बर १९८८ को ख़िलाफते क़ादरिया आलिया खुलफाईया से नवाज़ा। ख़िलाफत के बाद हज़रत शेख़ अब्दुल कादिर शाह कादरी मासूम पीर (रह.) का सिलसिला मुंबई के अतराफ और अपने वतन कनकवली शरीफ में जारी व सारी रहा। आज भी आप के आसतानए मुबारक से हजारों लोग फ़ैज़ पा रहे हैं।

आप के पीर व मुर्शिद हजरत किबला ख्वाजा शेख़ मोहम्मद हुसेन

शाह कादरी अलचिशती इफतेख़ारी बिजापुरी ने बशारत में आप को आख़री आरामगाह बताई। इसी के मुताबिक हजरत मासूम पीर ने ख़कसार को और खुलफाए कराम को साथ लेकर अपने गाँव वरोडे, ता. कनकवली, जि. सिंधुदुर्ग, महाराष्ट्र में ले गए। फिर बशारत में जो जगह बताई गई उसी जगह पर आपने निशानदेही की कि यही मेरी आख़री आरामगाह है। जिस की मेरे पीर व मुर्शिद हज़रत सरकार पीर आदिल ने मुझे बशारत की थी। उसी जगह आप की आख़री आरामगाह बनाई गई जिस में चालीस दिनों तक आप ज़िक्रे इलाही में मशगूल रहे।

उसी दौरान मुंबई में हजरत मासूम पीर के भाई शेख महमूद का इन्तेक़ाल हुआ। आप अपने मरहूम भाई के चहलुम की फातेहा ख़्वानी में मुंबई तशरीफ़ लाए। चहलुम की फातेहा ख़्वानी में सभी अहले ख़ानदान से मुलाकात हुई और ख़ैर ख़ैरियत और दुआ सलाम के बाद अपने घर चेम्बूर कादरिया नगर में तशरीफ लाए। कुछ दिनों के बाद आप की तबियत नासाज़ हो गई। ख़ानदान वाले चाहते थे कि मुंबई देवनार कब्रस्तान में जगह खरीद कर आप के लिए आख़री आरामगाह बनाई जाए। इस मसअले को हल करने के लिए ख़ानकाहे मख़मली पीर चेम्बूर में मीटिंग तलब की गई। जिस में सिलसिले के खुलफाए कराम, मुरीदीन, आशिकीन और ख़ानदान के सभी लोग मौजूद थे। इस मसअले पर ग़ौर व फिक्र करते हुए आधी रात बीत गई और कोई फैसला न हो सका। अहले महेफिल में सभी लोग ज़िक्र व फ़िक्र में मशगूल हो गए। उसी दौरान एक ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी। ''जिस को मेरे खुदा ने मुक़ाम दिया, उसको आप क्या बदल सकते हैं? जाओ सब ठीक हो जाएगा।''

ये ग़ैबी आवाज़ सुन कर सब का दिल बाग़ बाग़ हो गया और फ़ैसला वही हुआ जो आपके पीर व मुर्शिद हज़त सरकार पीर आदिल ने किया था। उस वक़्त फज़र की अज़ान हो रही थी और एक मिन्ट भी हो न पाया था कि फोन पर ख़बर आई कि हज़रत मासूम पीर का विसाल हुआ।

"क़ालु इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजेऊन"

आप का दुनयाए फ़ानी को छोड़कर जाना भी एक करामत है। विसाल की ख़बर सुन कर मीटिंग में मौजूद सभी हज़रात मासूम पीर के दीदार के लिए गए। अपने विसाल की खबर मासूम पीर ने कई लोगों को बशारत के जरिए दी। उन लोगों ने जब आकर देखा तो इस बात की तसदीक भी हो गई। हज़रत मासूम पीर ने विसाल से पहले पेशन गोई की थी कि ''पीर के दिन पीर आने वाले हैं।'' बरोज़ पीर ही को बतारीख १७ रबिउल आखिर १४१७ हिजरी मुताबिक २ सितेम्बर १९९६ को आपका विसाल हुआ।

ऐ ख़ुदा इल्तेजा है ये मेरी कलमए तय्यब से दम मेरा जाए
दिल तड़पता लरज़ता है मेरा बस यही दिल से ग़म मेरा जाए

(इर्फ़ने आदिल)

आपकी नमाज़े जनाज़ए मुबारक ख़ानकाहे मख़मली पीर के सामने क़ादरी विला, पी.एल. लोखंडे मार्ग, चेम्बूर (वेस्ट), में अदा की गई। जिस में हजारों की तादाद में मुरीदीन, आशिकीन, खुलफाए कराम शामिल थे। नमाज़े जनाज़ा आप के ख़लीफा भाई हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर शाह क़ादरी अलचिशती इफतेखारी रहमानी पीर साहब ने पढ़ाई।

बारिश का मौसम था आप का जनाज़ए मुबारक एम्बोलेंस गाडी के ज़रिये कनकवली शरीफ़, वरोडे गाँव की तरफ़ रवाना हुआ। गाडियों और बसों का क़ाफ़िला बढ़ता जा रहा था। मुंबई, पुणे, नारायन गाँव, शिरुर, अहमद नगर, गुजरात और यू.पी. से तमाम मुरीदीन, आशिकीन और खुलफाए कराम कनकवली शरीफ पहुंचे। कनकवली शरीफ पहुंचने के बाद गाँव के लोगों ने दीदार किया और नमाज़े जनाज़ा अदा की गई। और फजर के बाद आपकी तदफ़ीन अमल में आई और उसी जगह पर आप के मुरीदीन, आशिकीन ने मिल कर एक पुरनूर आसताना–ए–मासूम पीर तामीर किया।

ख़ुदा को देखने का ख़याल हुआ
हयात बाद हुई पहले इन्तेक़ाल हुआ

(सरकार पीर आदिल)

हर साल २३,२४ दिसम्बर को उर्स मुबारक हज़त मासूम पीर बडी शान व शौकत से मनाया जाता है। जिस में मीलाद शरीफ व ११वीं शरीफ, संदल शरीफ, लंगर शरीफ, ईमान अफ़्रोज़ रूह पर्वर बयानात और महफिले समाअ का एहतेमाम होता है। उर्स मुबारक में हज़ारों की तादाद में आशिक़ाने औलिया कराम तशरीफ लाकर रूहानी फ़ुयूज़ व बरकात से फ़ैज़याब होते हैं। और होते रहेंगे। (आमीन सुम्मा आमीन!)

तालीमाते क़लमा–ए–तय्यबा इक़रारून बिल्लिसान व तसदीकुन बिल कल्ब की तकमील जो कामिल ईमान के लिए फर्ज़ अव्वल है और बक़ाए इंसानी की बुनियाद है। दुनिया व आख़ेरत में जो अमन व सलामती का पैग़ाम है। जो **''मन अराफा नफ़सहू फ़क़द अरफ़ा रब्बहू''** की बय्यन दलील है। कुर्आन पाक में जा बजा पहले ईमान की फ़ज़ीलत का ज़िक्र है इसके बाद ही अमले सालेह का ज़िक्र है। जिस से ज़ाहिर है कि इसलाम के बदन में क़लमा ख़्वानी रगे जाँ और रूहे रवाँ की तरह रवाँ दवाँ है क्युंकि जिस तरह इल्म के बग़ैर एहसास और बुनियाद के बग़ैर इमारत हरग़िज़ मुसतहकम नहीं हो सकती। इसी तरह कामिल ईमान के बग़ैर किर्दार पाएदार और यक़ीनी नहीं हो सकता।

- ❖ ***तो किस तरह तालिबे हक़्क़ अपने ईमान को कामिल बना सकता है,***
- ❖ ***किस तरह फ़यूज़े रब्बानी, मआरेफ़ते इलाही की मनाज़िल तै कर सकता है,***
- ❖ ***और किस तरह क़लमा–ए–तय्यबा की मआरेफत, असरार व तजल्लियात से आशना हो सकता है।***

ये मेरे पीर व मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा शेख मोहम्मद हुसैन शाह क़ादरी अलचिशती इफ़तेख़ारी अल–हसनी वल–हुसैनी पीर आदिल

बिजापुरी (रह.) के फैज़ व करम का सदक़ा है कि जिन की रहनुमाई में इक़रारून बिल्लिसान व तसदीकुन बिल कल्ब के रम्ज़ और सही मफहूम से वाक़फियत हासिल हुई और जिन के इशके हक़ीक़ी, उलूमे बातनी, फ़ैज़े रूहानी और मआरिफते इलाही से सरशार होकर ये किताब वजूद में आई है।

यै अल्लाह इज़्ज़ व जल्ल शानहु और रसूले करीम (स्व.) का फ़ज़लो करम और एहसाने अज़ीम है। ज़मी औलियाए कराम की नज़रे इनायत है और मेरे पीर व मुर्शिद सरकार पीर आदिल की बन्दा नवाज़ी है कि खाकसार जो किताब शाये कर रहा है। उस का नाम **''कामिल ईमान''** है। जिस में क़लमा–ए–तय्यबा की दावते फिक्र क़लमा–ए–तय्यबा की तहक़ीक़ व तसदीक़, क़लमा–ए–तय्यबा की अज़मत, क़लमा–ए–तय्यबा की फ़ज़ीलत को कुर्आन व हदीस और औलियाए कराम के अक़वाल की रौशनी में पेश किया जा रहा है। यक़ीने कामिल है कि आशिकाने औलिय कराम और तालिबाने हक़्क़ इस किताब से फ़ैज़याब होंगे। आमीन सुम्मा आमीन!

खाकपा-ए-पीर आदिल
मख़मली पीर मुदज़िल्लहुल आली

✦✦✦✦

क़दीरअल्लाह का किरदार है कामिल ईमाँ
पीर आदिल का प्रस्तार है कामिल ईमाँ
क़्लमा सांसों में बसाने का करिशमा है ये
मख़मली पीर का शहकार है कामिल ईमाँ

बिसमिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

अफज़लूल ज़िक्र

ला इलाहा इल्लल्लाहू मोहम्मदुर्रसूलुल्लाहे

<u>ख़ालिके कौनो मकाँ</u>

अलहम्दुलिल्लाही रब्बिल आलमीन वस्सलातो वस्सलामो अला सय्यदुल मुर्सलीन शफीउल मुज़नबीन रहेमतुल्लिल आलमीन वअला आलेहि व असहाबेहि व अहले बैतेहि व अज़वाजल मुताहेरातो व आले व औलादे सय्यदुना मोहम्मदिन व बारिक व सल्लिम व सल्ले अला जमीअल अंबियाअे वल मुर्सलीन व अला कुल्लो मलाइकातिल मुकर्रबीन वअला फुक़राए व मसाकीने वअला इबादल्लाहिस स्वालेहीन वत-तैय्यबीनल ताहेरीनो अजमईन।बिराहमतेका या अरहमर्राहिमीन।

''ऐ माबूदो मौजूदो मशहूद, ऐ रब्बे कायनात तेरी हम्दो सना को बयान करें इस से तो क़लम व ज़बान आजिज़ ही हैं। तू ही नूरून अला नूर है और तू ही आशिकों की अंखियों की पुतलियों का न सिर्फ़ नूर है बल्कि तेरे ही नूर की चमक से हर शै में जगमगाहट है और हर शै अपनी असली शक्ल पर क़ायम और रौनक़ अफ़ज़ा है। तेरा ही नूर कुल आलमों पर मुहीत है। तेरे ही नुर से नुरे मोहम्मदी (स्व.) रौशन हुआ है सदके में नूरे मुहम्मदी (स्व.) के हर शै ने उस नूर को पाया है। अंबिया अलैहिस्सलातो वस्सलाम और औलिया कराम ने उसी नूर से न सिर्फ़ अपने सीनों को रौशन किया बल्कि उसी नूर के जलवों से हर मंज़िल व मक़ाम को भी पुरनूर किया है। हर शै में चमक उसी नूर से है और यीं नूर हय्युल क़य्यूम है। हर ज़िन्दगी उस नूर से ज़िंदगी पाती है तो हर आशिक ने उसी नूर की जुस्तजू में अपनी ज़िंदगियों को वक़्फ़ कर रखा है। जहाँ आशिकों के दिल उस नूर से धड़क्ते हैं वो इश्क की मंज़िल भी यही नूरून अला नूर है। यही

वो नूर है जो कुदरत की सारी अक्कासी को अपने वजूद में समाए हुए हैं और उसी की रौशनी खलक़त में जगमगा रही है।

कायनात की हर चीज़ उस की ज़ात पर शाहिद है। ये अफ़लाक की बुलंदियाँ, ज़मीन की वुसअतें, समुंदर की पिंहाइयाँ, ज़ियाए आफताब, नूरे क़मर, सितारों की जगमगाहट, दरियाओं का ज़ोर, नदियों का शोर, परिंदों की चहचहाहट, जमाले बाग़ व राग़, गुलों का बाकंपन, कलियों की पिन्हाईयां व ज़ेबाई, ये तमाम का तमाम हुसने फ़ितरत उसी बे निशान की निशान दही करता है वो जब्बार व कह्हार भी है, वो ज़बरदस्त और हर चीज़ पर क़ादिर है। वो ख़ताओं और लग़ज़िशों की परदा पोशी करने वाला और गुनाहगारों की मग़फिरत करने वाला है वो हादी व राहनुमा है। उस ने अपने बंदों की रहनुमाई के लिए अपने तमाम अंबिया और रसूल भेजे और हमें सरकारे कायनात (स्व.) के उम्मती होने का शर्फ़ बख़शा।

तेरी ज़ात पाक है ऐ खुदा, तेरी शान जल्ले जलालहू
हम तुझी से मांगते हैं दुआ, तेरी शान जल्ले जलालहू

हम बेकसों के मालिक, कौनो मकाँ वाले
फरयाद सुन हमारी, दोनों जहाँ वाले

लायक़े हमदो सना तू ही तू है सत्तारे कुल
हम बंदए मोहताजे कुल तू मालिक व मुख़्तारे कुल

है ये आरज़ू तेरी दीद हो, मेरे घर हमेशा ईद हो
तेरा जलवा हो मेरे रू बरू, तेरी शान जल्ले जलालहू

(सरकार पीर आदिल रह.)

शाने रहमतलल्लिल आलमीन (स्व.)

बिसमिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

अफ़ज़लूल ज़िक्र

ला इलाहा इल्लल्लाहू मोहम्मदुर्रसूलुल्लाहे

करोड़हा दुरूद व सलाम हो नबीए करीम अलैहिस्सलातो वस्सलाम और उनकी आल और असहाब पर जिस को रब्बे जुलजलाल ने हक़ के साथ मबऊस किया। जो फ़ारान की चोटियों से खुदा का आखरी पैग़ाम ले कर उतरा और नूरे हिदायत से जहाने जिन्न व इन्स को रौशन कर दिया। जिसने ऊंटों के चराने वालों के दिलों में तौहीद की शमअें रौशन कीं और सहरा नशीनों को ताजदारे अरब व अजम बना दिया और असनाम परसती की ज़ुलमतों से निकाल कर सबीलुर्रिशाद की तरफ़ राहनुमाई फ़रमाई। बे इन्तेहा दुरूद व सलाम हो प्यारे रसूले करीम (स्व.) पर जिस ने इन्सानियत की हिदायत के लिए गालियाँ खाईं। जिन पर पत्थर बरसाए गए जिन के पाए मुबारक संगबारी से लहू लोहान हो गए लेकिन रहमतुल्लि आलमीन की शान ये कि आप (स्व.)की ज़बाने मुबारक से दुआए ज़रर का एक लफ़्ज़ तक न निकला। दुरूद व सलाम हो उम्मत के उस गमगुसार पर जो रातों को जाग जाग कर उम्मत की मग़्फिरत के लिए रोते और दुआयें करते रहे। ऐ रब्बे करीम! अपने प्यारे महबूब सरकारे दो जहाँ (स्व.) के सदक़े तुफैल में हम सब की मग़फिरत व शफ़ाअत अता फ़रमा। आमीन सुम्मा आमीन!

खुदा भी ज़िक्र करता है तुम्हारा या रसूलल्लाह (स्व.)
बडी ताअज़ीम से तुम को पुकारा या रसूलल्लाह (स्व.)

(स्रकार पीर आदिल रह.)

की मोहम्मद(स्व़) से वफा तुने तो हम तेरे है
यै जहाँ चिज़ है क्या लोह कलम तेरे है

(अल्लामा इकबाल)

दावते फ़िक्र

बिसमिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

अफ़ज़लूल ज़िक्र

ला इलाहा इल्लल्लाहू मोहम्मदुर्रसूलुल्लाहे

बिरादराने मिल्लते इस्लामिया और आशिक़ाने औलियाए कराम!......

अस्सलामो अलैकुम व रहमतल्लाहे व बरकातुहू!

इसलाम का सब से पहेला फर्ज़ क़लमा–ए–तय्यब है और क़लमा–ए–तय्यब इस्लाम की बुनियाद है। क़लमा–ए–तय्यब हमारे विर्दे ज़बाँ है। पर वही क़लमा दिल से पढ़ने के सलीक़े से हम वाकिफ नहीं हैं। न ही उस की तहक़ीक़ व तसदीक़ से वाक़िफ हैं। अहकामे शरीअत में भी पहला रूक्न क़लमा–ए–तय्यब है। इस लिए क़लमा–ए–तय्यब को समझना हर मुसलमान मर्द व औरत पर फ़र्ज़ है।

हमारी तहरीक का ताल्लुक़ भी क़लमा–ए–तय्यब से है। जिस से कुल कायनात बनी, जिसे अफ़ज़लुज़्ज़िक्र क़रार दिया गया। यही क़लमा मोहरे नबूव्वत है, अफ़ज़ल तरीन बारे अमानत है, राहे निजात का ज़रीआ है, बख़शिश का सामान है, आख़ेरत का तोशा है, कुल इल्म व हिकमत के ख़ज़ानों की कुंजी है, क़लमा ही दीदारे इलाही का ज़रिया है, क़लमा ही तन, मन आरै कफ़न की ज़ीनत है और क़लमा–ए–तय्यब से ही क़ब्र में रौशनी है।

अल्लाह की मख़लूक़ पे एहसान है क़लमा
मख़लूक़ की बख़शिश का सामान है क़लमा

यूं तो कुर्आन की हर आयत अल्लाह का ज़िक्र है। लेकिन ज़िक्र से मुतअल्लिक इर्शादे बारी तआला है कि: **"वल–ज़िकुल्लाहे अकबर"** तर्जुमा: और बेशक अल्लाह का ज़िक्र सब से बडा है। (सूरा अन्कबूत–४५)

इर्शादे बारी तआला है कि :**"अला बिज़िक्रिल्लाहि ततमइन्नुल् कुलूब"** तर्जुमा: बेशक अल्लाह के ज़िक्र में ही दिलों का चैन है।(सूरा अल रअद–२८)
इर्शादे नबवी (स्व.) है कि: **"ज़िकरूल्लाहे फर्ज़ मिन क़ब्ले कुलै फर्ज़"** तर्जुमा: अल्लाह का ज़िक हर ज़िक्र से पहले फर्ज़ है। यूं तो हर कोई अल्लाह का ज़िक्र कर रहा है। लेकिन ज़िक्र में सब से अफ़ज़ल ज़िक्र क़लमा–ए–तय्यब **ला इलाहा इल्लल्लाहू मोहम्मदुर्रसूलुल्लाहे** है। क़लमा–ए–तय्यब का ज़बान से इक़रार तो सभी कर रहे हैं लेकिन तसदीकुन बिलक़ल्ब से वाक़िफ़ नहीं।

इमामे आझम अबू हनीफ़ा रज़िअल्लाहो अन्हु फरमाते है कि: **"अल ईमानो इक़राऊम्बिल्लिसाने व तस्दीकुम् बिल्जनाने व अमलुन् बिल्अरकान्"** तर्जुमा: क़लमा–ए–तय्यब का ज़बान से इक़रार, दिल से तस्दीक़ और आज़ा के साथ अमल ईमान है। तस्दीकुन बिलकल्ब की खातिर साहबे इर्फ़ान, पीरे कामिल की अशद ज़रूरत है। बग़ैर पीरे कामिल के तस्दीकुन बिलकल्ब मुम्किन नहीं।

इर्शादे बारी तआला है कि: **"या अय्यो हल्लज़ीना आमनुत्तकुल्लाहा वबतग़ू इलैहिल वसीलता व जाहेदू फी सबीलेही लअल्लकुम तुफ़्लेहून"** (सुरे मायदा–३५) तर्जुमा: ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और उसकी तरफ़ वसीला ढूंडो और उस की राह में मुजाहिदा करो, इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ।

इर्शादे बारी तआला है कि: **"इन्नल्लज़ी न युबायिइनू–न–क इन्नमा युबायिऊ–नल्ला–ह यदुल्लाहि फौ–क़ ऐदीहिम्"** (सुरह फ़तह–१०) तर्जुमा: वह जो तुम्हारी बैअत करते हैं, वह तो अल्लाह ही से बैअत करते हैं, उनके हाथों पर अल्लाह का हाथ है।

इर्शादे नबवी (स्व.) है कि: **"फ़र्ज़ुल इन्साना यतलोबुल्शेख कामेलतौं व फिल् मकान व फ़िल अज़्म व फिरशाम व फ़िरूम"** तर्जुमा: फ़र्ज़ है हर इन्सान पर तलब करना पीर कामिल (शेख) का अगर

हो क़रीब मकान में और वह मुल्के अजम में या वह मुल्के शाम और वह मुल्के रूम में। (अज़ बुरहानुल् हकायक, सफहा २६०)

तो फर्ज़ है कि हर इन्सान पीर कामिल की तलाश करे और कुर्आन व हदीस की रौशनी में ईमान की पुखतगी और क़लमा की तहक़ीक़ व तस्दीकुन बिलकल्ब की खातिर बैअत हो कर क़लमा—ए—तय्यब से अपनी रूह को पाक करें और दामने पीर कामिल से वाबस्ता हो कर सय्यदुल औलिया, महबूबे सुब्हानी, कुतुबे रब्बानी, अबू मोहम्मद मीराँ मोहियुद्दीन शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़िअल्लाहो अन्हु का वसीला और वास्ता हासि कर के सय्यदुल मुर्सलीन, खातिमुन्नबीय्यीन, शफ़ीउल मुज़न्नेबीन, रहमतल्लिल आलमीन, इमामुल अव्वलीन व आखेरीन अहमद मुजतबा मोहम्मद मुस्तफ़ा (स्व.) की काली कमली के साये में शफ़ाअत के हक़दार होकर गुलामाने रसूल बनें।

इसके बाद पीर कामिल उलूमे बातिन, असरारे मअरिफत की तरफ़ मुतवज्जह कराते हैं। जैसा कि हज़रत अली करमअल्लह वजहुल करीम का क़ौल है **"मन अरफा नफ्सहू फकद अरफ़ा रब्बहू"** तर्जुमा: जिस ने पहचाना अपने नफ़स को उस ने पहचाना अपने रब को।

इबादत व बंदगी भी पहचान कर करने का हुक्म है। बग़ैर पहचाने क़ाबिले कुबूल नहीं। हुजूर (स्व.) का क़ौल है कि : **"ला युकबलल्लाहो इबादतुल अब्द् कुल्लाहा मारेफ् तुल्लाहे तआला"** तर्जुमा: नहीं कुबूल करता उस बंदे की इबादत जब तक न पहचाने अपने माअबूद को।

जिस ने हुक्म दिया वह कौन है और कहाँ है? जो हमारे पास बंदगी का हुक्म लाया है, हुक्म लाने वाले को पहचान्ना अज़हद ज़रूरी है।

कहा हम को देकर खुदा ज़िंदगी
पहचानो मुझे और करो बंदगी
(अल्लमा मीर हयात)

हज़रात! ये वो इल्म है जिस को मयस्सर आया उस ने छुपाया अपने को भुला, खालिक़ को पाया, यही वह राज़े मख़फ़ी है जो सीना ब सीना दाखिल होकर दिलों को नूर से मुनव्वर करता है। इसी रौशनी में हम सब कुछ देख सक्ते है। क़लमा—ए—तय्यब की अमानत, तहक़ीक़ व तस्दीक़ **"मन अर्फ़ा नफ़्सहू फ़क़द अरफ़ा रब्बहू"** का मुकम्मल खुलासा सरकारे दो आलम (स्व.) से सहाबा कराम ने पाया, ताबईन और तबे ताबईन से होते हुए ये बारे अमानत सीना ब सीना औलिया कराम, पीराने उज़्ज़ाम तक आई और आज भी सिलसिलए कादरिया आलिया खुल्फ़ाईया, सिलसिलए हज़रत सरकार पीर आदिल र.अ. में ये तालीमात मौजूद हैं। खलकुल्लाह हर दौर में उसे पाती रही और ता क़यामत पाती रहेगी।

सिलसिलए क़ादरिया आलिया खुलफाईया में सिलसिला—ए—पीर आदिल (रह.) के महवर व मर्कज़ पीर व मुर्शिद हुजूर आला हज़रत अज़ीमुल बरकत, फ़ैज़े दरजत, कुतुबुल अक़ताब, शेखुल आशिकीन, मेहब्बुल सादेक़ीन, शेखुल वासेलीन, आरिफ़ बिल्लाह हज़रत ख़्वाजा शेख मोहम्मद हुसेन शाह क़ादरी अलचिशती इफतेखारी अलहसनी वल हुसैनी पीर आदिल बिजापुरी (रह.) के फ़ैज़े निगाहे करम से दुनिया के कोने कोने से लोग आकर खाकसार के दस्ते हक़ पर बैअत हो कर अपनी मुर्दा सांसों को जिन्दा कर के अपने दम को कलमे से संवार रहे हैं और अपने क़ल्ब को नूर से मुनव्वर कर रहे हैं। अल्लाह तबारक व तआला इस फ़ैज़ाने करम को ता कयामत जारी रखे। आमीन!

बिरादराने मिल्लते इस्लामिया, आशिकाने औलियाए कराम और तालिबाने हक़ से इल्तेमास है कि इस क़लमा—ए—तय्यबा की अमानत को हासिल कर के अपनी दुनिया व आखेरत को संवारें और दो जहाँ में सरफराज़ हो जायें।

तौहीद व रिसालत की अजब शान है क़लमा
इन्सान की बख़्शिश का सामान है क़लमा

अल्लाह तबारक व तआला अपने प्यारे महेबूब सरकारे दो जहाँ (स्व.) के सदक़े तुफ़ैल में औलियाए कराम बुज़ुर्गाने दीन और पीर व मुर्शिद के वसीले से हम सब को सिलसिले में दाखिल हो कर उलूमे बातिन, असरारे मआरिफत हासिल करने की नेक तौफीक़ अता फ़रमाये। क़लमा–ए–तय्यब को समझने की नेक समझ अता फ़रमाए और अपने नेक बंदों में हमारा शुमार फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन!

खाकपाए पीर आदिल (रह.)

फ़क़ीर हक़ीर मन ख़्वाजा सूफ़ी शेख़ मोहम्मद यूनुस अली शाह क़ादरी अलचिशती इफ़तेख़ारी चिराग़े पीर आदिल मख़मली पीर

✦✦✦✦

किसी फ़क़ीर की सोहबत मे बैठ कर देखो
रसूले पाक की तनवीर यहाँ मिल्ती है
क़ादरी है ये घराना बड़ा तक़वा वाला
कामिल ईमान की तसवीर यहाँ मिल्ती है

तैहीद व रिसालत की अजब शान है क़लमा
इन्सान की बख़शिश का सामान है क़लमा

की मोहम्मद(स्व़) से वफा तुने तो हम तेरे है
यै जहाँ चिज़ है क्या लोह कलम तेरे है
(अल्लामा इकबाल)

कामिल ईमान क्या है?

बिसमिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

अफ़ज़लूल ज़िक्र

ला इलाहा इल्लल्लाहू मोहम्मदुर्रसूलुल्लाहे

''नहीं है कोई माबूद सिवाए अल्लाह के मोहम्मद(स्व.) अल्लाह के रसूल हैं''

मोहम्मद (स्व.)अल्लाह के बंदे और अल्लाह के सच्चे रसूल हैं जो कुछ वो अल्लाह की जानिब से ले कर आए और हमें बताया वो सब हक़ है उसी तस्दीक़ का नाम ईमान है और जिस के दिल में ये तस्दीक़ होगी वह मोमिन है।

✦ हज़रत मौलाना अैनी (रह.) ने फ़रमाया कि लुग़त में ईमान के मानी तस्दीक़ के हैं और शरीअत में दिल और ज़बान से तस्दीक़ के हैं और कमाले ईमान आमाल से हासिल होता है। मालूम होना चाहिए कि जुमला अहले सुन्त वल जमाअत और अहले तसव्वुफ़ व मआरिफ़त इस बात पर मुत्तफिक़ हैं कि असल ईमान ''तस्दीकुंन बिल क़ल्ब'' है। सूफ़ियाए कराम फरमाते हैं कि ईमान दिल से तस्दीक़ करने का नाम है। ईमान क़ौल, तस्दीक़ और अमल पर मुशतमिल होता है। (कशफ़ुल महजूब)

✦ नबी–ए–करीम(स्व.) ने फ़र्माया ईमान वो है जो दिल में क़रार पाए और उस की तस्दीक़ अमल से की जाए। (कशफ़ुल महजूब)

जब तक ये क़लमा दिल से अदा नहीं होगा और जब तक दिल का रूख सही नहीं होगा और जब तक दिल से अल्लाह का ग़ैर नहीं निकलेगा उस वक्त तक कोई अमल नहीं बन सक्ता। और जब तक आमाल नहीं बनेंगे कामयाब नहीं हों गे। सारे आमाल का दारो मदार ईमान पर और सारी कामयाबी का दारो मदार आमाल पर है।

✦ सय्यदना इमाम अबू हनीफा रज़िअल्लाहो अन्हु से मन्क़ूल है कि:

"अल ईमानो इक़राऊम्बिल्लिसाने व तस्दीक़ुम् बिल्जनाने व अमलुन् बिल्अरकान्" तर्जुमा: क़लमा–ए–तय्यब का ज़बान से इक़रार, दिल से तस्दीक़ और आज़ा के साथ अमल ईमान है।

✦ हज़रत इमाम ग़ज़ाली (रह.) कहते हैं कि तस्दीक़े क़ल्बी, इक़रारे लसानी और अमल बिलजवारेह इन तीनों का नाम ईमान है।

✦ हज़रत सय्यदना शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी (रज़ि) फरमाते हैं दिल व ज़बान से शुक्र के अलावा आज़ाओं से भी शुक्र अदा करना चाहिए।

✦ ईमाम फ़ख्र राज़ी (रह.) कहते हैं कि जिस ने ज़बान से इक़रार किया और क़ल्ब में तस्दीक़ नहीं की वह मुनाफ़िक़ है।

✦ ईमान की दो क़िसमें हैं: एक मुनाफ़िक़ का ईमान है जो ज़बान से इक़रार करते हैं और दिल में शक रख्ते हैं, ये मुनाफ़िक का काम है। लेकिन दूसरे ईमाने खास मोमिन लोग ज़बान और दिल से तस्दीक़ करते हैं। ये ईमान सिवाए नेककार आदमी के किसी की क़िसमत में नहीं होता। (हश्त, बहिश्त–३९)

✦ हज़रत सय्यदना शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी (रज़ि) फ़रमाते हैं कि अगर कोई हुज़ूरे क़ल्ब से ग़ाफ़िल हो तो उसके लिए ज़रूरी है कि सालिकों और आरीफो के नज़दीक जाए और कुफ़्र का इतलाक़ करे। (मुज़ाकिरा इर्फानी, १८३)

✦ हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया (रह.) फ़रमाते हैं कि जिस तरह अल्लाह तआला की शनाख्त फर्ज़ है उसी तरह जब तक उसकी तस्दीक़ दिल से ओर उसका इक़रार ज़बान से न किया जाए ईमान दुरूस्त नहीं होता। (हश्त, बहिश्त)

✦ अस्ल ईमान तस्दीकुन बिल क़ल्ब है और तस्दीकुन बिल क़ल्ब किस चीज़ से हासिल होती है?

✦ हज़रत सुलतान बाहू (रह.) फ़रमाते हैं: जिस शख़्स को तस्दीक़े कल्बी न हो उसे सिर्फ़ ज़बानी विर्द कुछ फ़ायदा न देगा।

चुनांचे **"इक़राऊन बिल्लिसान व तस्दीक़ुन बिल क़ल्ब"** ज़बान से इक़रार और दिल से तस्दीक़ करनी चाहिए। मालूम हुआ कि तस्दीक तमाम बातों की अस्ल है। अब जानना चाहिए तस्दीक़े क़ल्बी किस चीज़ से हासिल होती है? तस्दीक़े क़ल्बी, ज़िक्रे क़ल्बी से हासिल होती है और ज़िक्रे क़ल्बी शेख व मुर्शिदे कामिल से हासिल होती है।

"इक़राऊन बिल्लिसान व तस्दीक़ुन बिल क़ल्ब" से दिल व जान को क़लमा–ए–तय्यबा से पुर नूर करें। ये पाक क़लमा दीन की अस्ल जड़ है, ईमान की जड़ है। इस लिए जित्नी भी इस की कसरत की जाएगी उत्नी ही ईमान की जड़ मज़बूत होगी।

क़लमा–ए–तय्यब के **"इक़राऊन बिल्लिसान व तस्दीक़ुन बिल क़ल्ब"** की तालीम व तफ़हीम के लिए मुर्शिदे कामिल की सख्त ज़रूरत होती है। तालिबाने हक़ को चाहिए कि वो कामिल ईमान की तस्दीकुन बिल क़ल्ब के लिए मुर्शिदे कामिल के दस्ते हक़ पर बैअत होकर अपनी आख़िरत को संवार लें।

✦✦✦

कहते हैं कल्मे वाले, इर्फान चाहिए
अल्लाह नबी को पाने, कुर्आन चाहिए
आवाज़ आ रही है, बर्ज़ख़ की वादियों से
रूहानियत को कामिल ईमान चाहिए

हर एक तरफ़ सदा–ए–तरीक़त है दोस्तो!
कामिल ईमान की आज ज़रूरत है दोस्तो!
है फ़क़िरी ना मुकम्मल राज़े इरफ़ाँ के बग़ैर
दीन मिल्ता ही नहीं है कामिल ईमाँ के बग़ैर

(सरफ़राज़ सुल्तानी)

✦✦✦

इस्लाम की बुनयाद क़लमा-ए-तय्यबा

बिसमिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

अफज़लूल ज़िक्र

ला इलाहा इल्लल्लाहू मोहम्मदुर्रसूलुल्लाहे

इस्लाम की बुनयाद पाँच अर्कान पर है: क़लमा—ए—तय्यबा (**ला इलाहा इल्लल्लाहू मोहम्मदुर्रसूलुल्लाहे** की गवाही), नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज़।

इन में सब से अहम और पहला रूक्न क़लमा—ए—तय्यबा है। यही क़लमा—ए—तौहीद है जिसे पढ़कर इन्सान साहबे ईमान बन्ता है। यही क़लमा—ए—तौहीद बंदे की तरफ़ तौहीद और रिसालत को दिल से कुबूल करने और ज़बान से इज़हार का इक़रार है। इसी क़लमा—ए—तौहीद को अल्ला तआला ने अर्शे मोअल्ला पर लिख दिया है।

क़लमा—ए—तौहीद के दो जुज़ हैं। पहला जुज़ ''**ला इलाहा इल्लल्लाहु**'' है। इस में अल्लाह तआला की तौहीद है। यानी अल्लाह तआला के सिवा कोई ऐसी हस्ती नहीं है जो इबादत और बंदगी के लायक़ हो। इस्लाम के सारे निज़ाम फिक्र व अमल की बुनियाद तौहीद पर है ज़मीन व आसमान की इस काइनात में इबादत व बंदगी की मुसतहिक़ सिर्फ एक ही ज़ात है जिस का नाम अल्लाह है। वो अकेला सब का माबूद है अलवहिय्यत में उसका कोई शरीक नहीं। सारे कमालात की जामे और जुमला नक़ाइस से उसकी ज़ात मुनज़्ज़ा और पाक है। क़लमा—ए—तय्यब का दूसरा जुज़ **मोहम्मदुर्रसूलुल्लाहे**, रसुलल्लह (स्व.) की रिसालत है। यानी तौहीद के साथ हुजूर नबीए करीम (स्व.)की रिसालत का इक़रार व तस्दीक़ करना और शहादत देना है। इन दोनों अजज़ा (तौहीद व रिसालत) को दिल व जान से कुबूल करने का नाम ईमान है।

क़लमा—ए—तय्यब जिसे क़लमा—ए—तौहीद भी कहा जाता है।

ये उबूदियत की रूहे रवाँ और इस्लाम की जान है। दीने इस्लाम की पूरी इमारत इसी कल्मए मुबारक की बुनियाद पर क़ायम है। तमाम अंबिया और रसूल इसी तौहीद की तालीम के लिए मबऊस किए गए सूफ़ियाए कराम, आरिफ़ीन और बुज़र्गाने दिन व अहले तरीक़त इसी कलमे का एहतेमाम करते और तमाम अज़कार पर इसी को तरजीह देते हैं।

कुर्आने पाक और अहादीस में जिस कसरत से उस का ज़िक्र मौजूद है शायद ही किसी दूसरी चीज़ का इस क़दर ज़िक्र किया गया हो। कुर्आन पाक में ऐक सौ से ज़्यादा मक़ामात पर इसका जिक्र मौजूद है। कहीं इसे क़लमा—ए—तय्यबा, कहीं शज़र—ए—तय्यबा, क़लमा—ए—तक़वा और मक़ालीदुस्समावात वल—अर्ज़ (आसमानों और ज़मीन की कुंजियां) वगैरह के अलफ़ाज़ इस्तेमाल किए गए हैं और कहीं **'अल्लाह'** की जगह **'हू'** की ज़मीर के साथ ज़िक्र मौजूद है और कहीं पर क़लमा ''**ला इलाहा इल्लल्लाहु**'' मौजूद है और कहीं पर **मोहम्मदुर्रसूलुल्लाहे** मौजूद है।

क़लमा है दीनो ईमाँ, अर्ज़ो समाँ निगेहबाँ
क़लमा का लेके तोशा देखा मैं कूबकू है

(सरकार पीर आदिल)

ये नेमते क़लमा पाए वही तहरीरे अज़ल में था जिस के
कहलाए वही महबूबे खुदा, ये खास है नेमते आम नहीं

(सरकार पीर आदिल)

क़लमा है तौहीदे रिसालत
क़लमा है मेरे पीर की निसबत
तैबा की तनवीर है क़लमा
नूरे सरापा नूर है क़लमा

आती जाती सांस में क़लमा जारी है
कुदरत की हर चीज़ पे क़लमा भारी है

अफ़ज़लुल ज़िक्र क़लमा-ए-तय्यबा

बिसमिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

अफज़लूल ज़िक्र

ला इलाहा इल्लल्लाहू मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह

क़लमा–ए–तय्यबा का ज़िक्र अफज़लूल ज़िक्र है। सरकारे दो आलम ताजदारे मदीना (स्व.) ने फ़रमाया: मेरे और अंबियाए कराम के इर्शादात में अफज़ल तरीन क़लमा **ला इलाहा इल्लल्लाहू मोहम्मदुर्रसूलुल्लाहे** है। (सिर्रूल असरार,१०४)

हदीसे नबवी (स्व.) ''तमाम अज़कार में अफ़ज़लूल ज़िक्र क़लमा–ए–तय्यबा है।'' (मिशकात शरीफ)

तमाम नसीबों और तमाम किसमतों और कुल खज़ाइने इल्मो हिकमत की कुंजी क़लमा–ए–तय्यब है। क़लमा ही इसलाम को सब से पहेला रूकन है और क़लमा पढ़ना हर मुसलमान मर्दो औरत पर फर्ज़ है क़लमा समझ कर पढ़ना अशद ज़रूरी है बग़ैर सोचे समझे तो तोता मैना भी पढ़ सक्ते हैं।

क़लमा ही तौहीद व रिसालत है। जिस पर ईमान का दारो मदार है। इसी लिए हर मुसलमान मर्द व औरत पर फर्ज़ है कि पहले तौहीद व रिसालत पर उसका पुख़ता ईमान हो क्युं के जिस मकान की बुनयाद ही ठीक न हो उस पर इमारत कैसे ठहर सक्ती है। तौहीद व रिसालत संग बुनयाद है और बाक़ी नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज़ इमारत हैं। बस जिस मकान की बुनयाद ठीक होगी उसपर इमारत भी अच्छी ठहेरे गी। सब से पहले हर मुसलमान पर फर्ज़ है कि अपने ईमान को क़ायम करे क्युं के क़लमा ही से ईमान मुकम्मल होता है।

आम मुसलमान क़लमा को बहुत ही आसान समझते हैं। सिर्फ़ ज़बान तालू को लगा देने से क़लमा पूरा नहीं होता। इस तरह पढ़ने को ग़ैर

मुस्लिम भी पढ़ लेते हैं। अगर क़लमा सही अदा हो तो नमाज़ क़ुबूल होगी, रोज़े क़ुबूल होंगे, ज़कात क़ुबूल होगी और हज क़ुबूल होगा। इस लिए कि उन सब बंदगी व इबादत का दारो मदार ईमान पर है और ईमान की जड़ क़लमा है। कल्मे को समझ कर पढ़ना अशद ज़रूरी है।

ईमान जीस का नाम मोहम्मद रसूल (स्व.) है
क़लमा नहीं तो तेरी इबादत फ़ुज़ूल है
(सरकार पीर आदिल)

ये ज़िक्र ही अफ़ज़ल है ये ज़िक्र ही आला है
सीनों में मुस्लमाँ के ये ज़िक्र बसा दें गे
(सरकार पीर आदिल रह.)

दम ब दम ज़िक्र से जो चलते है।
फूल जैसे वो बु उगलते है।
इस लिए वो खुदा से मिलते है।
नुरी साँचे मे जाके ढलते है।
(सरकार पीर आदिल रह.)

मिला है पीर से अब काम या रसुल अल्लाह
लबो पे दिल मे सदा नाम या रसुल अल्लाह
(सरकार पीर आदिल रह.)

हम दिवाने मोहम्मद को पाकर देखो कलमे के पीछे पडे है।
अपनी नजरो मे उन को जमा कर देखो कलमे के पीछे पडे है।
(सरकार पीर आदिल रह.)

✦✦✦✦✦